_/_ दर्शन कर निज भगवान् का _/_

घट राखो अटल सुरती ने, दरसन कर निज भगवान का ||

सतगुरु धोरे गया सत्संग में, गुरांजी भय दिया हरी रंग में |
शब्द बाण मारया मेरे तन में, सैल लाग्या ज्याणु स्यार का |
मेरा मन चेत्या भक्ति में, घट राखो अटल सुरती ने || १ ||

जब से शब्द सुण्या सतगुरु का, खुलगा खिड़क मेरे काया नगर का |
मात पिता दरस्या नहीं घरका, दूत लेज्या यमराज का |
तेरा कोई न संगी जगती में, घट राखो अटल सुरती ने || २ ||

नैन नासिका ध्यान संजोले, रमता राम निजर भरजोले |
बिन बतलाया तेरे घट में बोले, बेरो ले भीतर बार का |
अब क्यू भटकै भूली में, घट राखो अटल सुरती ने || ३ ||

अम्रुतनाथ जी रम रह्या सुन्न में, मुझको दीदार दिखा दिया छीन में |
मघो मगन होज्या भजन में, रूप सेख निराकार का |
अब क्या सांसा मुक्ति में, घट राखो अटल सुरती ने || ४ ||

घट राखो अटल सुरती ने, दरसन कर निज भगवान का ||

जय श्री नाथजी की